कहानी

साहित्य की सभी विधाओं में कहानी एक अत्यंत लोकप्रीय और प्रभावशाली तथा महत्वपूर्ण विधा है। विश्व के सभी देशों में सभी युगों में कहानी के प्रति अबाल-वृद्धों का बराबर आकर्षण दिखाई देता है। अतिप्राचीन काल से ही कहानी मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण साधन रही है। इसकी लोकप्रियता देखते हुए धर्म और दर्शन के क्षेत्र में प्रचार, प्रसार के लिए कहानी का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है। उपनिषध, रामायण, महाभारत, आदि में हिंदुओं ने, जातक कथा के रूप में बौद्ध ने धम्म कहानी के रूप में जैनो ने धर्म प्रसार के लिए कहानी का सहारा लिया। पश्चिम में इसाप ने और पूर्व में हितोपदेश और पंचतंत्र में नीति और व्यवहार का उपदेश देने के लिए कहानी का खुलकर प्रयोग किया।

प्राचीन काल से गद्य और पद्य दोनों मे कहानियाँ मिलती है। संस्कृत, प्राकृत का कथा साहित्य सागर की तरह विशाल है। इसी का आश्रय लेकर हिंदी में भी कहानी अवतरित हुई। हिंदी में ऐतिहासिक, पौराणिक तथा लोकजीवन के प्रसंगों को लेकर अनके कहानियाँ लिखी गई जो अधिकतर पद्य में थी परंतु जिसे हम आज कहानी कहते है। उस गद्य विधा का विकास आधुनिक काल में ही हुआ।

आधुनिक काल में कहानी एक स्वतंत्र विधा के रूप में विकसित हुई है। लोकप्रियता के बारे में भी कहानी साहित्य सभी विधा की अपेक्षा बहुत ही आगे बढ़ चुका है। कहानी ने आज अपना कलात्मक विकास करके एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है।

कहानी इतनी विकसित हो जाने के बावजूद भी उसका उद्भव सर्वप्रथम कहाँ और कैसे हो गया यह बतलाना कठिन है। वैसे तो हम कह सकते है कि मनुष्य जब से भाषा बोलने लगा है तब से कहानी ने अपना रुप भी धारण कर लिया है। अर्थात कहानी का अस्तित्व बहुत ही पुराना है।

आज की कहानी कथा से बिल्कुल अलग ढंग की है क्योंकि प्राचीन कथा किसी विशेष या प्रसिद्ध व्यक्ति को लेकर बतलाई जाती थी। अर्थात कथा कही जानेवाली या सुननेवाली वस्तु थी । आज की कहानी पढ़ी-लिखी जानेवाली विधा है। आधुनिक कहानी की एक विशेष बात यह है कि वह केवल किसी विशेष या प्रसिद्ध व्यक्ति के बारे में लिखि-पढ़ी जानेवाली विधा नहीं बल्कि आज की कहानी का नायक साधारण और उपेक्षित मनुष्य भी हो सकता है।

सारांश रूप से हम कह सकते है कि कहानी कथा से विकसित हुआ एक रूप है लेकिन प्राचीन कथा और आधुनिक कहानी में काफी अंतर है। ऐसी कहानी को परिभाषाओं में बाँधना कहाँ तक सफल और उचित है यह तो निश्चित रूप से बता नहीं सकते क्योंकि दिन-ब-दिन विविध शैलियों से विकासित होनेवाली और प्रसिद्धि की ओर चलनेवाली कहानी को परिभाषाओं में बाँधना कठिनसा महसूस होता है। फिर भी आधुनिक कहानी को परिभाषाओं में बाँधने का प्रयास हुआ है।

परिभाषाएँ ::--

- **हडसन :--** "लघुकथा में केवल एक ही मूल भाव है।"

- **वेल्स :--** " कहानी को आकार में अधिक के अधिक इतना बड़ा होना चाहिए कि वह सरलता से बीस मिनट में पढ़ी जा सके।"
- **एडगल एलर पो :--** "कहानी वह गद्य विधा है जो आधे घंटे से लेकर दो घंटे में समाप्त हो होजाती । "
- **एलेरी :--** "कहानी- घुडदौड के समान है जिसमें प्रारंभऔर अंत का विशेष महत्व होता है।"

भारतीय विद्वानों ने दी हुई परिभाषाएँ इस प्रकार है:--

- **प्रेमचंद :--** "कहाना (गल्प) एक रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा विन्यास सब उसी भाव को पुष्ट करते है।"

By Dr.Sangita Chitrakoti

- **जयशंकर प्रसाद :--** "सौंदर्य की एक झलक का चित्रण करना और उसके द्वारा रस की सृष्टि करना ही कहानी का उद्देश्य है।"
- **अज्ञेय :--** "कहानी जीवन की प्रतिछाया है और जीवन स्वयं एक अधूरी कहानी, एक शिक्षा है, जो उम्रभर मिलती है और कभी समाप्त नहीं होती।"

कहानी के तत्व : –

कहानी की निर्मिति कई विविध तत्वों के आधार पर होती है। यहाँ हम कहानी के कुछ आवश्यक तत्वों की ओर नजर डालेंगे। "

1] कथावस्तु :-- कथावस्तु कहानी का महत्त्वपूर्ण तत्व है। यदि हम कहे कि कथावस्तु कहानी का शरीर है तो अनुचित न होगा | कहानी के कथावस्तु में वैज्ञानिकता और काल्पनिक विलास अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है ! कथानक में घटनाओं की प्रमुखता रहती है। अतः इसी विवरण के आधारपर कथावस्तु को चार भागो में विभाजित किया है ---

- ➢ **प्रस्तावना =** इसमें पात्रों का संक्षिप्त परिचय दिया जाता है। चारित्रिक विशेषताओं का दर्शन और साथ-साथ घटनाओं से उसका संबंध भी बतलाया जाता है। वातावरण - सामाजिक स्थिति और अन्य आवश्यक बातों का दर्शन प्रस्तावना में आता है |
- ➢ **मुख्यांश =** मुख्यांश में कथावस्तु का संघर्ष रहता है। चाहे दुर्बल या सबल संघर्ष क्यों न हो लेकिन मुख्यांश में उसका आरंभ हो जाता है। मुख्यांश की विशेषता यह रहती है कि इसमें संघर्ष की स्थिति स्वाभाविक रूप से चरित्रों के विकास के लिए अनुकूल होती है।
- ➢ **क्लायमैक्स =** क्लायमैक्स में कथावस्तु का संघर्ष और पाठकों की चरम सीमा पर पहुँच जाता है।
- ➢ **पृष्ठभाग =** पृष्ठभाग में कहानी का परिणाम रहता है। पृष्ठभाग में ही वातावरण, घटना, चरित्र चित्रण को पूर्ण विकास के बाद कहानी का अंत हो जाता है। अर्थात संपूर्ण रहस्य का उद्घाटन पृष्ठभाग में ही किया जाता है । अतः हम कह सकते है कि बिच्छु का डंख उसकी पुंछ में होता है ठीक उसी प्रकार कहानी का रहस्य, सारा प्रभाव अंत में निहित रहता है।

2] शीर्षक :-- कहानी का शीर्षक औत्सुक्य निर्माण करनेवाला, लघु,और नवीन होना चाहिए। डॉ जगन्नाथ शर्मा ने लिखा है कि " शीर्षक में प्रतिपाद्य बोधकता अनिवार्य है।"
इसी प्रकार चार्ल्स बैरेट ने लिखा है – "शीर्षक विषयानुकूल, निश्चयबोधक, आकर्षक, नवीन एवं लघु हो।"
कहानी के शीर्षक अनेक प्रकार के हो सकते है–

- ❖ भावात्मक ---- व्रतभंग
- ❖ तथ्योद्दबोधक ---- एक गौ, डाकू
- ❖ नामवाची ---- काबूलीवाला
- ❖ ऐतिहासिक ----स्वर्ग के खंडहर
- ❖ संबंधवाची ----जीजी, माँ, पत्नी
- ❖ एक शब्दवाले ---- रोज, कफन, शरणागत ,अकेली
- ❖ दो शब्दवाले ----शतरंज के खिलाड़ी , चित्र का शीर्षक
- ❖ वाकयात्मक ---- मुगलोने सल्तनत बख्श दी, तुम किसकी हो बिन्नी, ताला खुला है पापा।

किन्तु शीर्षक का कथावस्तु से संबंध होना चाहिए | बनावट तथा अस्वाभाविकता उसमें नहीं होनी चाहिए क्यों कि शीर्षक की सफलता पर ही कहानी की सफलता निर्भर रहती है।

3] पात्र एवं चरित्र चित्रण :-- आधुनिक कहानी में चरित्र चित्रण का विशेष महत्त्व है। चरित्र चित्रण का संबंध पात्रों से होता है। कहानी के पात्रों की संख्या कम से कम होनी चाहिए। कहानी में पात्रों के संपूर्ण चरित्र पर नहीं बल्कि उनके कुछ जाज्वल्यपूर्ण अंशो पर ही प्रकाश डाला जाता है। कहानी के पात्र सजीव और व्यक्तित्वपूर्ण होने चाहिए। चरित्र चित्रण करने के लिए कथोपकथन, घटना, वर्णन, संकेत, विश्लेषण अंतर्द्वंद्व आदि की आवश्यकता है।

4] कथोपकथन / संवाद :-- यह तत्व कहानी का प्राण है। चरित्र चित्रण का आवश्यक तत्व कथानक के विकास के लिए संवाद आवश्यक है। कथा को स्वाभाविकता देने का कार्य कथोपकथन द्वारा ही होता है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि पात्रों के दृष्टिकोण उनके विचार, उनके आदर्श, उदेश्य, कथोपकथन, द्वारा प्रभावात्मक रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है। कहानी की घटनाओं कोगतिमानता तथा भाषाशैली का प्रभाव भी इसी तत्व पर निर्भर रहता है। इतना ही नहीं कथोपकथन ही कहानी में सजीवता, रोचकता, प्रवाह, औत्सुक्य निर्माण करता है। लेकिन कथोपकथन भी पात्रों और परिस्थितियों के अनुकूल होने चाहिए।

सफल संवादों के गुण इस प्रकार है –

1) संवाद गतिशिल, सरल, आकर्षक होने चाहिए।
2) वे लघु , मार्मिक, स्वाभाविक, मौलिक होने चाहिए।
3) संवाद पात्र, परिस्थीति को अनुकूल होने चाहिए।
4) संवाद मनोवैज्ञानिक होने चाहिए।
5) जिज्ञासा उत्पन्न करनेवाले होने चाहिए।
6) अपने आप में पूर्ण , उदेश्य प्रकट करनेवाले होने चाहिए।

5] देशकाल और वातावरण :-- 'यह तत्व उपन्यास लिए जिस प्रकार आवश्यक है उसी प्रकार कहानी के लिए भी आवश्यक है। लेकिन कहानी में उसका विस्तार कम रहता है।

कहानी में सजीवता, स्वाभाविकता लानेवाले तत्वों में वातावरण का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। इस तत्व के अंतर्गत कहानी में देशकाल का चित्रण, वेशभूषा, साज-सज्जा, रीतिरिवाज, रहन-सहन, आचार- विचार, प्रकृति वर्णन, नगर वर्णन, ऋतु वर्णन, काल आदि का समावेश होता है। पात्र, घटना या परिस्थिति के अनुरूप कहानीकार देशकाल और वातावरण उत्पन्न करता है। यह तत्व कहानी को प्रभावात्मकता प्रदान करता है।

6] भाषा शैली :-- कहानी की भाषा, वातावरण, पात्र और परिस्थिति के अनुकूल होनी चाहिए | स्वच्छ, सरल, व्यावहारिक स्पष्ट, शुद्ध, गतिशील, सरस, गंभीर और भावपूर्ण भाषा कहानी में होनी चाहिए। कहानी की शैली भी आकर्षक, हास्य व्यंग्य और विनोद से युक्त होनी चाहिए। लोकोक्ति एवं मुहावरों से युक्त भाषा शैली सुंदर मानी जाती है।

आज की कहानी में निम्नलिखित शैलिया दिखाई देती हैं —

- **आत्मचरित शैली:--** इसमें पात्र स्वयं बोलता है।

- **ऐतिहासिक या अन्य पुरुषवाचक शैली :--** यह वर्णनात्मक होती है।
- **संवादात्मक शैली :--** दो पात्रों के वार्तालाप द्वारा कहानी लिखी जाती है।
- **पत्रात्मक शैली :--** दो या कई पात्रों द्वारा लिखी जाती है। इसमें आदि, मध्य, पत्र द्वारा तथा अंत में कहानीकार उपसंहार करता है।

- **डायरी शैली :--** डायरी की भाँति कहानी लिखी जाती है।
- **मिश्र शैली :--** इस रूप में एक से अनेक शैलियों का मिश्र रूप दिखाई देता है।

- **पूर्वदीप्ति शैली :--** इसमें वर्तमान घटना से प्रारंभ होकर अतीत से उसका संबंध जोड़ा जाता है।

- **आंचलिक शैली :--** इसमें आँचल ही नायक होता है। किसी आँचल का खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा, केशभूषा, भाषा- मुहाँवरे, लोकोक्तियाँ, कहावते आदि का वर्णन प्रमुख होता है।

7] उद्देश्य :-- साहित्य की प्रत्येक विधा किसी न किसी उद्देश्य या लक्ष्य को लेकर लिखी जाती है | अत: कहानी भी सोद्देश्य लिखी जाती है। कहानी का ध्येय केवल मनोरंजन करना ही नहीं है तो इसका ध्येय जीवन के तथ्यों का विश्लेषण तथा मानव मन का निकट से अध्ययन भी है।

कुछ कहानीकार कहानी में उद्देश्य तत्व को विशेष महत्व प्रदान करते हैं और कुछ इसको इतना महत्व नहीं देते। वास्तव में कहानी हमारी समस्याओं को हल नहीं करती अपितु वह मार्गदर्शन करती है।

By Dr.Sangita Chitrakoti